जब रक्षक बने भक्षक

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मुसीबतों में जो सहायक होता है, कष्टों से जो उबारता है वह रक्षक है। देव, गुरु और धर्म सबसे बड़े रक्षक हैं। माता–पिता, पुलिस, सैनिक रक्षक हैं। रक्षक देश की रक्षा करता है। लेकिन जब रक्षक ही भक्षक बन जाता हैं तो कष्ट से कौन उबार सकता है। जब रक्षक ही गलत रास्ता चुन लेता है, गलत रास्ते पर चला जाता है तो देश की रक्षा कौन करेगा। लोभ के कारण लोग रक्षक से भक्षक बन जाते है। धार्मिक उन्माद फैलाकर, दुष्प्रेरणा देकर रक्षक से भक्षक बना दिया जाता है। जब रक्षक ही भक्षक बन जाता है तो बहुत बड़ी समस्या देश में उत्पन्न हो जाती है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है–

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे–युगे।।

अर्थात् सज्जनों की रक्षा करने के लिए और दुष्टों का विनाश करने के लिए, धर्म की स्थापना के लिए युग–युग में शरीर धारण करता हूं। समाज में गलत कार्य करने वालों का दण्ड मिलता हैं और अच्छे कार्य करने वालों को प्रोत्साहन मिलता है। सीमा पर खड़ा रहने वाला प्रहरी दुश्मनों से देश की रक्षा करता है और राष्ट्र की रक्षा करता है। यह उसका परम कर्त्तव्य है। किन्तु जब वही प्रहरी जिसके ऊपर रक्षा का दायित्व है वही गलत कार्य करने लगेगा तो रक्षा कैसे हो सकती है। जब बाड़ ही खेत को खाने लगेगी तो रक्षा कैसे होगी। इस सम्बन्ध में यह कहावत भी प्रसिद्ध है– घर का भेदी लंका ढ़ावे। देश में रक्षा का उत्तरदायित्व मुख्य रूप से पुलिस, अर्द्धसैनिक बल और सैनिकों का है। भारतीय राज व्यवस्था में सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यवस्था स्थानान्तरण व्यवस्था है जिसके लिए कुछ मानक भी तय किये गये हैं। लेकिन सत्ताधारियों के लिए और सत्ता के नजदीकी चाहे वे नौकरशाह हो या कर्मचारी उनके लिए कोई नियम नहीं है। नियम या कानून ऐसे लोगों पर लागू होते हैं जो बेचारे हैं। भारतीय व्यवस्था में यह बात लागू होती हैं कि समरथ को नहि दोष गोसांई। अर्थात् जो लोग सत्ता के नजदीक हैं वे सदैव नियम कानून से ऊपर होते हैं। ऐसा हमेशा से होता रहा है और इसके

लिए सहयोगी व रक्षक की भूमिका में सत्ताधारी लोग होते है। जो सत्ता या सत्ताधारियों के करीब नहीं होते हैं वे परेशान होते है और उनका उत्पीड़न होता है। इससे कर्मचारियों के मन में निराशा की भावना पनपती है और वे सही ढ़ंग से अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन नहीं कर पाते। सबसे कठिन समस्या पुलिस के सामने आती हैं। यदि पुलिस अपने उत्तरदायित्व का निवर्हन निरपेक्ष होकर के करती है तो उस पर अनेक प्रकार के दबाव आते हैं और उसे कानून के हिसाब से कार्य नहीं करने दिया जाता। इससे व्यवस्था भंग होती है और समाज के बदमाश लोगों का मनोबल बढ़ता है। जिसका परिणाम यह होता हैं कि समाज में अव्यवस्था फैलती है और इसका भी उत्तरदायित्व पुलिस पर ठोक दिया जाता है। मुठभेड़ के दौरान यदि कोई पुलिस वाला घायल हो जाता है तो उसके परिवार वालों पर क्या बीतती है इसका सहज में अनुमान किया जा सकता है। भीड़ के द्वारा पथराव की स्थिति में पुलिस वाले चौट खां जाते है। सर्दी, गर्मी, बरसात में उन्हें अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करना पड़ता है। विभिन्न प्रकार के अपराधियों को पकड़ना और न्यायालय में प्रस्तुत करना पुलिस का कार्य है। किन्तु यदि पुलिस अपने कार्य को ईमानदारी से पूरा नहीं करती। लोभ, लालच और प्रलोभन में आकर कर्त्तव्य च्युत हो जाती है तो वह रक्षक के बजाय भक्षक बन जाती है।

रक्षक की भूमिका विभिन्न वर्गों, समूहों और सामाजिक स्तर के साथ बदलती रहती है। विद्यार्थी, श्रमिक, पत्रकार, वकील, जनप्रतिनिधि, प्रतिष्ठित व्यक्ति सभी अपनी सोच के अनुरूप अपनी अपेक्षाएं रखते हैं। इसके परिणामस्वरूप रक्षक को अपनी भूमिका निर्वाह में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। देश में जहां कही भी अराजक स्थिति पैदा होती है धर्म, जाति, लिंग आदि के आधार पर एक वर्ग दूसरे वर्ग का शोषण करता है। वहां देश की कानून व्यवस्था का उल्लंघन होता है। ऐसी स्थिति में रक्षकों का यह कर्त्तव्य होता हैं कि वे तत्काल कानून व्यवस्था को बहाल करने में सहायता करें और कानून तोड़ने वालों को पकड़कर उन्हें दण्डित करने में सहयोग करें। किन्तु कभी–कभी देखा यह जाता हैं कि पुलिस ऐसा कार्य न करके प्रताड़ित पक्ष को ही दण्ड देने लगती है। यह उसका अनुचित कार्य एक भक्षक का कार्य बन जाता है। पुलिस व्यवस्था को आज नई दिशा नई सोच और नये आयाम की आवश्यकता है। समय की मांग है कि पुलिस नागरिक स्वतन्त्रता और मानवाधिकारों के

प्रति जागरूक हो और समाज में सताये हुए तथ दबे कुचले लोगों के प्रति संवेदनशील बने। समाज में कानून और व्यवस्था को बनाये रखना, सशक्त से अशक्त की रक्षा करना, उनका कानूनी ही नहीं नैतिक उत्तरदायित्व भी है। कानून और व्यवस्था के नाम पर कभी–कभी कुछ कर्मचारी रक्षक के स्थान पर भक्षक बन जाते हैं। इससे पुलिस की छवी खराब होती है। अधिकारों की आड़ लेकर किसी को सताना, अपराध स्वीकार कराने के नाम पर अभियुक्त को पीट–पीट कर मार डालने के समाचार संभ्रान्त नागरिकों में भय व्याप्त करते हैं इससे लोगों में पुलिस के प्रति अविश्वास उत्पन्न होता है। अतः देश के नागरिकों को ऐसा वातावरण मुहैया कराना जिससे वे भय मुक्त होकर सुखमय जीवन व्यतीत कर सकें।